विषय-सूची

प्रथम अध्याय

पृष्ठ

धर्मका स्वरूप—विविधताका रहस्य—ईश्वर कर्तृत्वाकर्तृत्व-समन्वय —हिंसा-अहिंसा, गोवध, वर्णाश्रम–व्यवस्था–द्वैताद्वैत–समन्वय और वैनयिक मिथ्यात्व—धर्मशास्त्रसे दर्शनादिशास्त्रोंका पृथक्त्व–विविधताके रहस्यके सूत्र। १

धर्मका उद्देश्य—इस जीवनका हित १७

त्रिविध दुःख—धर्मसे दुःख-नाश–संयम–इन्द्रियसंयम–प्राणिसंयम–कानून और धर्म। १९

परसुखमें निजसुख—सुखदुःखका हिसाब–कीटपतङ्गोंका विचार–जीवन्मुक्त और कर्तव्य। २३

जगत्कल्याणकी कसौटी— २९

अन्तर्नादकी आलोचना—मिल, बेन्थमका मत–लोकमान्य तिलकका आक्षेप—उसका उत्तर–अधिकतम सुखवाली नीतिका संशोधन।

सुखी बननेकी कला—कर्मयोग या निर्लिप्तता–कायरताका उत्तर–निवृत्ति और गृहत्यागकी मीमांसा—अनावश्यक कष्टोंकी मीमांसा। ३५

धर्म-मीमांसाका उपाय—सर्वधर्मसमभाव—कसौटीका उपयोग–सम्प्रदायोंसे सारग्रहण–रूढ़ि और शास्त्र–सर्वजाति-समभाव–नरनारी-समभाव। ४३

धर्ममीमांसा और जैनधर्म—दोनोंका अविरोध ४९

दूसरा अध्याय

जैनधर्मकी स्थापना—प्राचीनताका मोह–नवीनताके गुण–चौबीसकी संख्या–तीर्थंकर और धर्म–जैनधर्मसंस्थापक महावीर–पार्श्वधर्म जुदाधर्म –केशीगौतमसंवाद–संवादपर विचार–सामायिक छेदोपस्थापना— ५२

संवादकी उपयोगिता–जैन नामोंके उल्लेखकी निःसारता–ऋषभदेवका उल्लेख–ऋषभदेव और भागवत–खंडगिरिका शिलालेख–मोहनजो दड़ोके चिह्न और जैनधर्म–अरिष्टनेमि–अनन्तजिन ।

महात्मा महावीर—देवागम आदिकी निःसारता ९१

देवशब्दका अर्थ—वास्तविक महत्त्व—महावीर और कृष्ण—गर्भाहरणकी कल्पना—बाल्यजीवन–दीक्षा—

बारहवर्षका तप—तापसाश्रममें महावीर—चौमासेमें प्रस्थान—नियमनिर्माण–यक्ष–अच्छंदक–चण्डकौशिक सर्प–मस्करी गोशालका साथ–विविध उत्सर्ग-सहन ११०

कैवल्य और धर्मप्रचार—गणधरोंका परिचय–विधवाविवाह–देवागमन-कल्पनाकी निःसारता–प्रश्नोंका महत्त्व १३३

चतुर्विध संघ–महावीरकी सतर्कता १४४

त्रिपदी— १४८

अतिशयादि—दिगम्बर-श्वेताम्बरोंका मतभेद १४९

सहजातिशय—अतिशयोंका सम्भवरूप १५०

कर्मक्षयजातिशय—अतिशयोंका सम्भवरूप १५५

देवकृत अतिशय—अर्धमागधीका अर्थ–अतिशयोंका सम्भवरूप १६६

आठ प्रतिहार्य— १७६

मूलातिशय—सब अतिशयोंका निष्कर्ष ,,

महावीर-निर्वाण— १८०

दिगम्बर-श्वेताम्बर—आचार्यपरम्परा–शास्त्रभेद १८३

मतभेद और उपसम्प्रदाय—निह्नव–जमालि-तिष्यगुप्त-अव्यक्तदृष्टि–अश्वमित्र–रोहगुप्त–गोष्ठामाहिल–द्राविडसंघ–यापनीयसंघ–काष्ठा और माथुरसंघ–मूर्त्तिपूजक अमूर्त्तिपूजक–तेरहपंथ-बीसपंथ— १९२

तीसरा अध्याय

कल्याणपथ अर्थात् मोक्षमार्ग— २११

सम्यग्दर्शनका स्वरूप—सत्यासत्यादि चार भेद—श्रद्धा और अन्ध- २१२

विश्वास—सम्यग्दृष्टिका जीवन—आत्मतत्त्व—सम्यग्दर्शनकी असाम्प्रदायिकता

सम्यग्दर्शनके चिह्न—प्रशमादि–अस्तिकनास्तिकका स्वरूप–निर्भयता–२५३
—इहलोकभय—परलोकभय—वेदनाभय—मरणभय—अत्राणभय—अश्लोकभय—आकस्मिकभय।

दर्शनाचारके अङ्ग—निःशंकता—निःकांक्षता निर्विचिकित्सता— २७३
स्पृश्यास्पृश्यविचारकी निःसारता–चौकापंथकी विचित्रता—अमूढ़दृष्टित्व-मूढ़ताओं और रूढ़ियोंका त्याग—लोकमूढ़ता—शास्त्रमूढ़ता—परीक्षाका महत्त्व और उसकी व्यावहारिकता–देवमूढ़ता—गुरुमूढ़ता—गुरुओंकी परीक्षाका महत्त्व—उपबृंहण या उपगूहन—स्थितिकरण—स्थितिकरणके छः कर्तव्य—वात्सल्य—वात्सल्यकी असाम्प्रदायिकता—प्रभावना—देव-शास्त्र-गुरुका श्रद्धान और सत्यक्त्व—तत्त्वार्थ-श्रद्धान और सम्यक्त्व—सम्यग्दर्शनकी व्यापकता।